सत् धर्म की स्थापना करने 'मैं' इस धरा पर आता हूँ...

शिव पुराण, रामायण, महाभारत, यजुर्वेद, मनुस्मृति व श्रीमद्भगवद्गीता से लेकर कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात की गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण व परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वो परकाया प्रवेश कर नई सृष्टि की रचना का दिव्य कर्त्तव्य कराते हैं। यहां तक कि शिव पुराण में तो स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

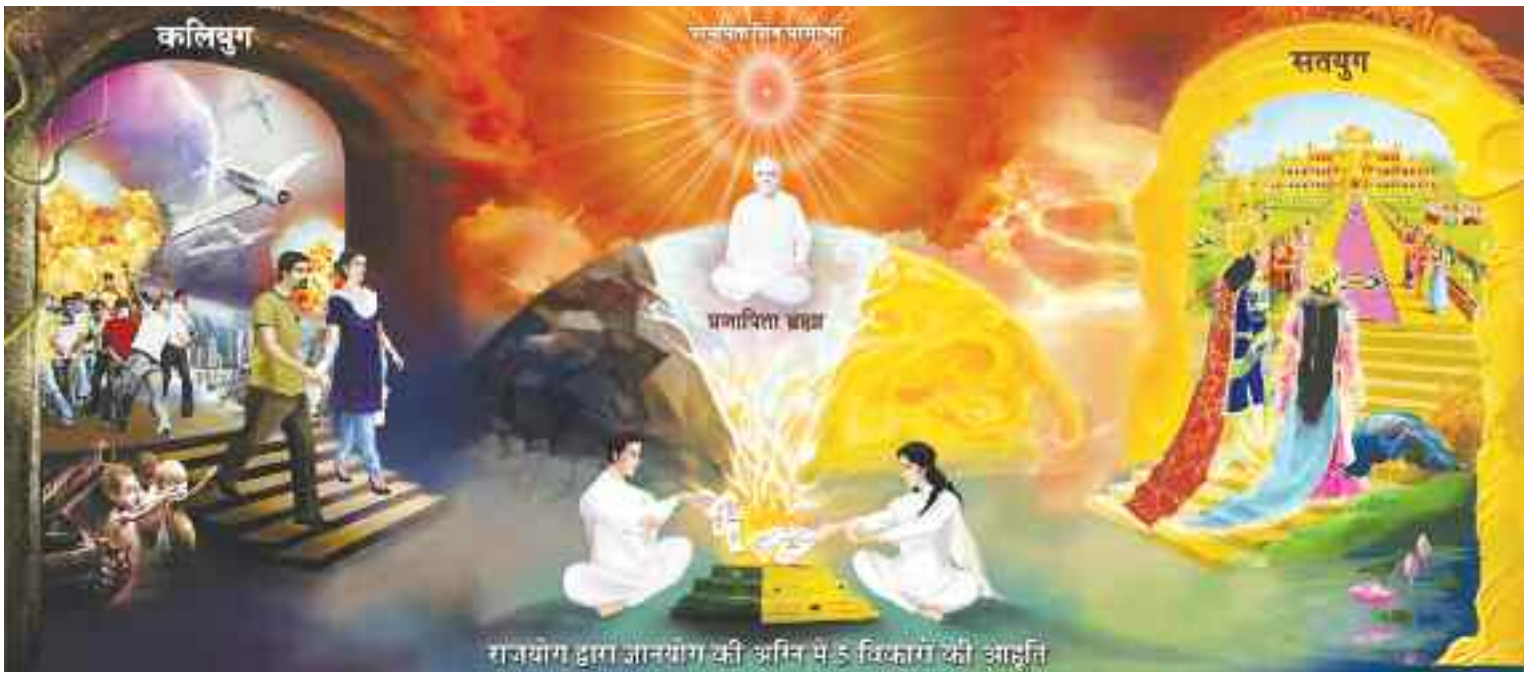

काल चक्र की अंतिम वेला, घोर कलियुग के अंतिम चरण में जब अधर्म, पापकर्म, भ्रष्टाचार अपनी सारी सीमाएं लांघ चुके। विज्ञान ने विनाश की पूरी तैयारी कर ली। प्रकृति अपनी पूर्वावस्था पाने को लालायित। सम्बन्ध तार-तार हो रहे। तनाव-अवसाद ने हर मानव के मन-मस्तिष्क में अपना डेरा डाल लिया। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट मनुष्य सच को न सुनना, न समझना और न उसपर चलना चाह रहा। बारूद पर लेटी धरती नव जीवन पाने की चाह में अंतिम श्वास की सिसकियां ले रही। इस दयनीय अवस्था से बाहर निकालना संसार के किसी भी बड़े से बड़े विद्वान, ज्ञानी, महापुरुष, साधक के वश की बात नहीं। ऐसे समय पर सिर्फ और सिर्फ एक सहारा परमात्मा ही सबको नज़र आ रहा, जो इन विनाशकारी, दुःखदायी अवस्था से हर मानव और प्रकृति को निकाल एक सुखदायी, आनंदमयी और सतोप्रधान अवस्था प्रदान कर सकते हैं। ये महापरिवर्तन केवल ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है। इसलिए आज स्वयं सृष्टि के रचयिता निराकार शिव परमात्मा की इस धरा पर अत्यंत आवश्यकता है।

सभी शास्त्र और पुराणों ने भी माना परमात्मा का अवतरण

गीता में भगवान के महावाक्य हैं, मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद, तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूँ। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सत् धर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूँ। वत्स, तू अपने मन को मेरे में लगा। तो मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूंगा। मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि यह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाता है? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा परमशिक्षक बन हमें देते हैं।

परमात्मा कहते, वत्स! तू मन को मुझमें लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू अपने मन को मुझमें लगा! जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता, उसी तरह आत्मा पर जन्मों से चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, निरंतर, परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पाप कर्मों की मैल धुल जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा परमात्मा की शक्ति से सम्पूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है। और मनुष्य की इस अवस्था को ही हम देवी-देवता कहते हैं।

रामायण में लिखा है कि - बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना। कर बिनु कर्म करइ विधि नाना।। आनन रहित सकल रस भोगि। बिनु बाणि वक्ता बड़ जोगि(शिव के लिए)।।

वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के कर्म करता है, फिर भी हज़ारों भुजाओं वाला है। बिना मुंह के सारे(छाहों) रसों का आनंद लेता है। और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अण्ड प्रकट हुआ, जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशवान था।
- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

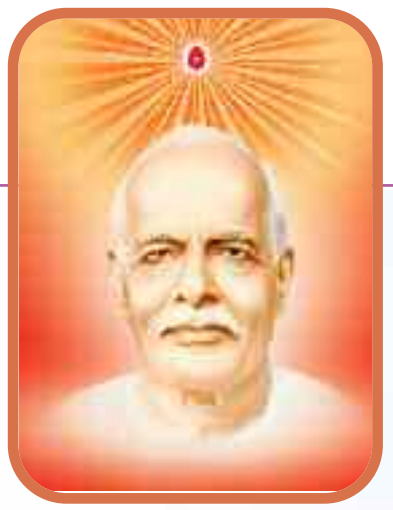

शिव पुराण में कोटि रूद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।' समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नव युग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान के सागर हैं तो हम आत्मायें उनकी संतान ज्ञान स्वरूप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी, महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्मा जी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहाँ है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है। जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्य आत्मायें कहाँ से इस सृष्टि पर आती हैं? इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं। स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात् परमधाम।

स्थूल लोक : आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन पाँचों तत्वों से मिलकर बना है स्थूल लोक, मनुष्य सृष्टि, जिसमें हम निवास करते हैं। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि चक्र आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं। सृष्टि की हर पाँच हज़ार वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्मायें नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्म लोक : सूर्य, चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म(अव्यक्त) लोक है। उस लोक में फैले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार महादेव शंकरपुरी है। इन तीनों देवताओं के पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र व आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षुओं द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख अथवा विकारों का नाम-निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम : सूक्ष्म लोक से ऊपर एक असीमित रूप से फैले हुए तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है, इसे अखंड ज्योति, ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिंदु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्मायें अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्म लोक, परमधाम, शांति धाम, निर्वाण धाम, मोक्ष धाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। अतः वहां न सुख है, न दुःख है। बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।